स्थान है।

इसके बाद 1508 में पोप द्वारा पुनः आदेश पर माइकेल को रोम वापस आना पड़ा और सिस्टाइन चैपल की छत को अपनी रुचि विरुद्ध चित्रण करना शुरू किया। क्योंकि पोप ने माइकेल को इस कार्य को करने के लिए बाध्य किया इसलिये वह काम करता जाता था और बड़बड़ाता रहता था कि " यह मेरा काम नहीं है। मैं बेकार में अपना समय नष्ट कर रहा हूँ "

माइकेल इसलिए भी नाराज था क्योंकि पोप जूलियस ने

माइकेल से चित्रण कार्य करवाने के लिए मूर्ति-निर्माण कार्य से हटा दिया था। सिस्टाइन चैपल की छत को अलंकृत करने में इसे चार वर्षों तक निरन्तर गुजारना पड़ा और 1513 में इसे पूर्ण कर पाया। इस छत पर माइकेल ने तीन समूहों में चित्र बनाये तथा प्रत्येक समूह में तीन-२- दृश्य हैं। सम्पूर्ण चित्रसमूह "सृष्टि का सृजन" नाम से विश्वविख्यात है।

(अ)

(1) प्रथम समूह में संसार के सृजन (क्रियेशन ऑफ वर्ल्ड) दृश्य हैं। इसमें ईश्वर द्वारा आकाश, प्रकाश, तथा अंधकार को अलग-२-करके चित्रित किया गया है। (पहले का विवरण फिर से फिर से लिखो)

(ब) इस भाग में ईश्वर को वनस्पती की उत्पत्ती तथा नक्षत्रों का सृजन करते हुये दर्शाया है।

(स) इस भाग में ईश्वर द्वारा पृथ्वी को आशीर्वाद देते हुये दर्शाया है।

(2) दूसरे समूह में मानव का पतन दर्शाया है।

(अ) इस भाग में ईश्वर द्वारा आदम की सृष्टि को दर्शाया गया है। चित्र में एक बलिष्ठ मानव आकृति को नग्न मुद्रा में पहाड़ी क्षेत्र (जिसमें पत्थर टीले आदि हैं) को आराम की मुद्रा में दर्शाया गया है। जो अपने एक हाथ की कोहनी को पीछे टेककर दूसरे हाथ को घुटने पर रखकर बैठा है। द्रष्टि व चेहरे पर बहुत गम्भीर भाव है।

(ब) इस भाग में ईव का सृजन दर्शाया है। चित्र में ईव को आदम के समीप से निंद्रा से उठना दर्शाया है।

(स) इस भाग में आदम और ईव की लालच और पतन की कहानी चित्र भाषा द्वारा दर्शायी गयी है।

तीसरे समूह में

"use less ness of sacrifice" "बलिदान की निरर्थकता" के प्रश्नों को चित्रित किया गया है।

(अ) इस भाग में नो आह के बलिदान का चित्रण है।

(ब) इस भाग में गृह के नशे की स्थिति को दर्शाया है।

(स) इस भाग में प्रलय (बाढ़) का चित्रण है।

सिस्टाइन चैपल बाहर से देखने में जितना असुन्दर है। उतना ही अधिक अन्दर से सुन्दर है। इस चित्रमाला में कुल 343 आकृतियाँ हैं। (पीठ के बल, खाना पीना भूल जाना सोना भी, और कोई अन्दर तब तक प्रवेश नहीं कर सकता यदि कोई आ भी जाता है तो उसे पोप की अनुमति पर ही खोलना)

माइकेल के लिए कला का अन्तिम लक्ष्य नग्न मानव आकृति ही थी। इस समूह चित्र में 20 नग्न आकृतियाँ हैं। जो सबसे अधिक विशालकाय हैं। सभी जोड़े के साथ हैं। और सभी एक

इशारे की तरफ मुँह किये हुये है। उन सभी की मुद्रायें भिन्न-२ व स्थितियाँ अलग-२ है। सभी प्रमुख आकृतियाँ अत्यन्त बलिष्ठ, हष्टपुष्ट, माँसल, जोशीली तथा स्फुर्ती वाली है। यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि अपनी रुचि विरुद्ध कार्य की पूर्ती व इतना अधिक मानसिक असन्तुलन होने पर भी माइकेल की यह चित्रमाला इतनी महान सिद्ध हुई कि विश्व की किसी भी कृति से इसकी तुलना नहीं की जा सकती है। और ना ही इससे पूर्व कोई भी अन्य कलाकार ईश्वर की सृष्टि सृजन से सम्बन्धित इतना सशक्त चित्रण कर सका हो। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि माइकेल ने बिना किसी अन्य कलाकार की सहायता के यह महान कार्य पूर्ण कर दिखाया।

इस समय माइकेल की आयु मात्र ३७ वर्ष की थी किन्तु पीठ के बल लेट कर कार्य करने और अति व्यस्तता के कारण वह बूढ़ा सा प्रतीत होने लगा था। उसके गले में भी सूजन आ गयी थी और दृष्टि भी बुरी तरह ग्रसित हो गई थी। उधर पोप जूलियस की मृत्यु हो गई और उसका उत्तराधिकारी "ल्योटेन्थ" बना जिसने रैफेल को प्राथमिकता तथा माइकेल की उपेक्षा की। परिणाम स्वरूप निराश माइकेल फ्लोरेन्स लौट आया। १५१२ में चैपेल का उद्‌घाटन हुआ जिसमें माइकेल की बहुत प्रशंसा हुई।

लगभग 20 वर्ष बाद माइकेल ने सिस्टाइन चैपेल का कार्य एक बार फिर अपने हाथों में लिया इसकार "मनुष्य की उत्पत्ति" चित्रित की इसके बाद "द लास्ट जजमेन्ट" "क्रुसीफिक्शन ऑफ सेण्ट पीटर" मैडोना एण्ड चाईल्ड विद सेन्ट जॉन एण्ड एंजिल्स, द होली फैमिली, क्यूपिड

वसारी के अनुसार :- "कला इतिहास में उसका योगदान महान था, विश्व के महानतम शिल्पीयों में आज उसकी गणना की जाती है। उसके चित्रों में भी मूर्ति शिल्प के प्रति प्रबल अभिरूचि के प्रत्यक्ष दर्शन होते है।" 75 वर्ष की आयु में वह भवन. निर्माण में रूचि लेने लगा था सेन्ट पीटर के प्रसिद्ध चर्च का वह प्रधान वास्तु शिल्पी था जीवन के अन्तिम दिनों में उसने ईसा की सूली" के अनेक रेखा चित्र बनाये इसी पर कार्य करते समय 18 फरवरी 1564 को उसका देहावसान हो गया।